शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-4, Issue-1
15 Jan-2013

मध्य प्रदेश से प्राप्त प्राचीन मूर्तिशिल्प में श्रृंगार एवं शांत रस

डॉ॰ अमिता खरे

सहायक प्राध्यापक, चित्रकला विभाग, वन्देमातरम् शिक्षा महाविद्यालय, ग्वालियर

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

मध्य प्रदेश से प्राप्त प्राचीन मूर्तिशिल्प में श्रृंगार एवं शांत रस

– डॉ॰ अमिता खरे

प्राचीन मूर्ति शिल्प का पुरातात्विक एवं ऐतिहासिक दृष्टि से अध्ययन प्राय: हुआ है। भाव एवं रस की दृष्टि से प्राचीन मूर्ति शिल्प का अध्ययन अन्तरानुशासनात्मक शोध का नवीन आयाम है। यह शोध आलेख प्राचीन मूर्ति शिल्प का रस सिद्धांत की दृष्टि से अध्ययन प्रस्तुत करता है।

विषय संकेत:– प्राचीन मूर्ति शिल्प, मध्य प्रदेश में प्राप्त प्रतिमाएँ, मूर्तिशिल्प एवं कविता

भारतीय इतिहास कला संस्कृति में म.प्र. का महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। कला रूप की सर्जना करती है। अरूप को रूप देती है, अव्यक्त को व्यक्त करती है। कुछ विद्वानों ने रस को सौन्दर्य से भिन्न माना है यद्यपि सामान्यत: रस को परम सौन्दर्य की अनुभूति माना गया है। भारतवर्ष में रस को कला का प्राण माना गया है। इसमें सन्देह नही है कि रस का स्वरूप अत्यन्त सूक्ष्म है। भारतीय मनीषियो द्वारा रस का सम्बन्ध आत्मा से बताया गया है। भारतीय कला में ज्ञानमय कोश तक ले जाने वाली अनेक कृतियां भी हैं जैसे कि शांति, मोक्ष आदि विचारणाओं को समझाने और प्रस्तुत करने वाली जैन व बौद्ध प्रतिमाएँ। इनमें हस्त मुद्राओं से स्पष्ट संकेत दर्शक को मिलते हैं।

प्रतिमा का अर्थ प्रतिरूप होता है प्रतिमा शब्द अत्यन्त प्राचीन काल से प्रयुक्त होता रहा है। कलाकार जो कुछ देखता या कल्पना कर प्रस्तर व अन्य धातु पर अंकन करता है वह प्रतिमाएं होती हैं। विश्वभर में लगभग 25000 वर्षों से मूर्तियाँ बनाई जाती रही है और इनमं मातृ, देव-देवियाँ, यक्ष, किन्नर, गंधर्व, असुर आदि की मूर्तियाँ हैं। मंदिरों के बाहर भी धर्म निरपेक्ष मूर्तियाँ प्रचुर मात्रा में मिलती हैं। खजुराहो, कोणार्क, एलोरा आदि मंदिर तो मूर्ति शिल्प के अनुपम उदाहरण हैं। भारतीय दृष्टि से नाट्य शास्त्र, नृत्य शास्त्र, प्रतिमा शास्त्र एवं चित्रसूत्र आदि में भावों व उनसे उत्पन्न रसों को कलाओं का मूल आधार माना गया है।[1]

भरतमुनि द्वारा प्रतिपादित रस ग्रन्थ में नाट्यशास्त्र प्राचीनतम ग्रन्थ है। कलाओं का सम्बन्ध भावों से होता है। भावों की व्यवस्था को संसार में समस्त देशों के कलाकारों ने महत्त्व दिया। अन्य देशों में जहाँ भावों का विचार, सामान्य रूप से हुआ वही भारत में भावों का विचार, रस के अन्तर्गत किया गया है। रस का सबसे पहले विचार भरतमुनि के नाट्य-शास्त्र में हुआ है।[2] संस्कृत भाषा में रस शब्द का प्रयोग अनेक अर्थो में किया गया है।[3] कला के प्रसंग में रस अभिव्यंजनीय वस्तु होता है। सहृदय व्यक्ति का हृदय इसका आस्वादन करता है। अत: यह स्वादनीय भी कहलाता है।[4] भरतमुनि ने रसों की संख्या आठ मानी है जिसका वर्णन इस प्रकार है।

रस	– लक्षण	भाव भंगिमाऐं
1. श्रृंगार रस	– स्त्री पुरुष प्रेम	कान्ति, लावण्ययुक्त रूप, माधुर्य, वेश आभूषण
2. हास्य रस	– हास्यप्रद कार्य	कुबड़े, बौने, विकट दृष्टि
3. करुण रस	– प्रिय का नाश या वियोग याचना,	वियोग, शरणागत का त्याग, प्रिय वस्तुओं को बेचना, व्यसन आदि
4. वीर रस	– सत्कार्य का उत्साह	प्रतिज्ञा, शूरता, उदारता तथा गर्व का भाव
5. रौद्र रस	– दुष्ट दलन	कठोरता, विकार, क्रोध, हिंसा भाव, चमकते हुए शस्त्र

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly
Vol-4, Issue-1
15 Jan-2013

डॉ॰ अमिता खरे
सहायक प्राध्यापक, चित्रकला विभाग, वन्देमातरम् शिक्षा महाविद्यालय, ग्वालियर

www.shodh.net
Web Portal of Humanity & Social Science Research

6. वीभत्स रस	- घृणा	श्मशान के समान निन्दित स्थान, हत्या के दृश्य दिखाने के कारण दारूणता का अनुभव कराने वाला शिल्प वीभत्स होता है।
7. भयानक रस	- अनिष्ट की आशंका	दुष्ट, क्रूर, उन्मत्त, हिंसक व घातक प्राणियों का अंकन
8. अद्भुत रस	- अलौकिकता (आश्चर्य)	विनय, रोमांच, चिंता तथा गरुण के समान मुख आदि को प्रस्तुत करने वाला शिल्प अद्भुत रस से सम्बन्धित होता है।[5]

भरत मुनि ने रसों को दो कोटियों में रखा है। रति एवं शोक का पारिवारिक जीवन तथा स्वजनों से विशेष सम्बन्ध होता है अत: यह विशेष कोटि में रखे गये हैं। भरतमुनि ने चार मूल रसो से चार आश्रित रसों की उत्पत्ति मानी है- श्रृंगार से हास्य, रौद्र से करुण, वीर से अद्भुत, तथा वीभत्स से भयानक।[6]

रस के सम्बन्ध में अभिनव गुप्त ने अपने ग्रन्थ अभिनव-भारती में रस को आनन्द कहा है। यह आनन्द वस्तुगत ना होकर आत्मगत होता हैं। रस की अनुभूति आनन्ददायक होती हैं। रस का आधार भाव होते हैं। अभिनव गुप्त ने नौ भाव कहे हैं नवाँ रस शांत रस होता है जिसकी भाव भंगिमाऐं सौम्य, आकृति, ध्यान, धारणा, आसन व तपस्वियों की भांति व्यक्तियों को दिखाया जाता है तथा रस सिद्धान्त की अनेक व्याख्यायें लिखी गई हैं। रस के विषय में अभिनव गुप्त का मत बहुत महत्त्वपूर्ण है और बाद के सभी विचारकों द्वारा मान्य है। उनके अनुसार रस का आस्वादन ब्रह्मानन्द के समान है।[7]

रसानुभूति की प्रक्रिया कला में तन्मय हो जाने की प्रक्रिया है, जिसके एक छोर पर सहृदय प्रेक्षक होता है तो दूसरे छोर पर कृति की कलात्मक शक्ति होती है।[8] अभिनव गुप्त के अनुसार रस का अनुभव कुछ समय तक रहने वाली ''निर्बाध प्रतीति'' है। अत: यह चमत्कार के अतिरिक्त कुछ भी नहीं। रस का अनुभव करते समय विषय पूर्णत: नष्ट हो जाता है।[9] चित्रसूत्र में नवाँ रस शांत रस माना गया है। कुछ विद्वान इसे ''भक्ति रस'' भी मानते है। किन्तु इसे सभी ने स्वीकार नही किया है।[10] डॉ0 नगेन्द्र के अनुसार :- रस आनन्दमय होता हैं। यह निर्विवाद है तथा श्रृंगार, वीर, हास्य, अद्भुत, और शांत रस का आस्वादन तो स्पष्टत: आनन्दमय होता है परन्तु करुण, भयानक, वीभत्स आनन्दमय होता है। यह संदिग्ध है।[11]

रस सिद्धान्त नाट्य, काव्य, नृत्य, संगीत व अन्य कलाओं की भाँति मूर्ति कला में भी मान्य हुआ है।[12]

श्रृंगार रस

रूप गोस्वामी के अनुसार श्रृंगार रस को ही भक्ति से समायुक्त करके ''मथुरा रति'' का नाम दिया गया है। राधा का महाभाव जिसमें कृष्ण भक्ति का सर्वश्रेष्ठ रूप मथुरा भक्ति या प्रीति रस समझा जाता है।[13] जब आभूषण, रूप, भोग आदि से अंग विभूषित हो तो उसे श्रृंगार तथा सौन्दर्य कहते है। श्रृंगार की यह परिभाषा आलम्बन राधा के प्रसंग में दी गई है। श्री कृष्ण के रूप माधुरी प्रसंग में कहा गया है कि दया, स्पर्धा, शौर्य, उत्साह, दक्षता एवं सत्य की विद्यमानता ही श्रृंगार है[14] तथा इससे यह संकेत मिलता है कि रूप गोस्वामी पुरुषो के पक्ष में शारीरिक सौन्दर्य के साथ-साथ नैतिक गुणों को ही श्रृंगार का आदर्श मानते थे। पुरुष श्रृंगार के रूप में उनकी दृष्टि जहॉ वीरता मूलक कार्यों पर थी वहो नारी श्रृंगार में अंलकरण की ओर झुकी हुई थी। खजुराहो में श्रृंगार से परिपूर्ण अप्सराओं को मोहक स्वरूप में शिल्पांकित किया गया है। अंलकरण व श्रृंगार के बिना सौन्दर्य अपूर्ण होता है। भारतीय शिल्पियों की निगाहों में शिल्प, लय एवं प्रवाह के साथ-साथ आभूषणों की साज-सज्जा, नारी में प्राकृतिक सौन्दर्य को उदीप्त करने में बहुत मददगार होती है।[15] भारतीय सौन्दर्य दृष्टि, वस्तुत: भारतीय जीवन-दृष्टि का पर्याय है।[16]

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-4, Issue-1
15 Jan-2013

डॉ॰ अमिता खरे

सहायक प्राध्यापक, चित्रकला विभाग, वन्देमातरम् शिक्षा महाविद्यालय, ग्वालियर

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

प्रस्तर पर उत्कीर्ण प्रणय-संगीत की प्रतिमाऐं सारे विश्व में से लोगों को भारत की तरफ खींचता चला आ रहा है। खजुराहो और कोणार्क में उत्कीर्ण ऐसी रसीली मूर्तियों के सौन्दर्य का कौन मन ही मन रसास्वादन नहीं करना चाहता है। वस्त्रों की अपेक्षा चमचमाते आभूषण से नारी आकृति को अलंकृत कर उसके सौन्दर्य को देदीप्यमान करने की प्रवृति भारतीय शिल्पकारों की विशेषता रही है। अलंकरण के बिना नारी सौन्दर्य अधूरा है। प्रकृति की कृति में अपनी सूझ-बूझ से और कुछ जोड़-गाँठ कर भारतीय शिल्पी ने उसके प्रकृति प्रदत्त सौन्दर्य को और भी निखारा है। सौन्दर्य के सम्बन्ध में अंलकरण विशेष महत्त्व रखता है। अलंकारों से कुरूप को सुन्दर नहीं बनाया जा सकता वरन् सुन्दर के ही सौन्दर्य को बढ़ाया जा सकता है। शिल्पियों ने श्रृंगार के द्वारा मूर्तियों को सौन्दर्य से परिपूर्ण बनाया है चेहरे पर बड़ी काली कजरारी आँखे कलाकार की कल्पना की ही अभिव्यक्ति है वह देखने में बहुत सुन्दर लगती हैं, भारतीय शिल्पकला नारी स्वरूप में श्रृंगार का अंकन प्राचीन काल से ही अनवरत प्राप्त होता है।[17]

खजुराहों के मंदिर में श्रृंगार से परिपूर्ण अनेक शालभंजिका प्रतिमायें प्रदर्शित हैं। शालभंजिका की प्रतिमाओं का निर्माण ईसा पूर्व तीसरी तथा दूसरी सदी से प्रारंभ हो गया था। कुछ विद्वान इन्हें महात्मा बुद्ध की माता महामाया का वह रूप मानते हैं, जब लुम्बिनी वन में महामाया ने बुद्ध रूप सिद्धार्थ को शालवृक्ष के नीचे जन्म दिया था। पर मध्यवर्ती काल में शालभंजिका का प्रदर्शन केवल अंलकारिक रूप में ही किया गया है और वह भी अनेक रूपों में। कहीं पर वह वृक्ष के नीचे बच्चे को उठाये हुए तो कहीं पर वह वृक्ष के नीचे स्नान निवृत्त होकर केश निचोड़ते हुए उत्कीर्ण किया गया है। शालभंजिका को कई विद्वानों ने सुर सुन्दरी के रूप में स्वीकार भी किया है।[18]

शालभंजिका शब्द से तात्पर्य शालवृक्ष के नीचे क्रीड़ा करती हुई प्रतिमा से सम्बन्धित है।[19] शिल्पियों द्वारा उत्कीर्ण शालभंजिका प्रतिमाओं में ग्यारसपुर जिला विदिशा से प्राप्त गुजरी महल संग्रहालय संग्रहित शालभंजिका की प्रतिमा एक श्रेष्ठ उदाहरण है।

दसवीं सदी की ग्यारसपुर जिला विदिशा से प्राप्त श्रृंगार रस युक्त पाषाण प्रतिमा ग्वालियर में स्थित गूजरी महल संग्रहालय में संग्रहीत शालभंजिका अप्सरा एक अनुपम उदाहरण है। यह प्रतिमा प्राचीन भारतीय मूर्तिकला की अनमोल धरोहर है।[20] शिलापट्ट के ऊपर त्रिभंग मुद्रा में उत्कीर्ण शालभंजिका लता तथा पंचफुलिया वल्लरी अंलकरण से अलंकृत अधोवस्त्र धारण किये हुये है शालभंजिका की सज्जा के आभूषण उच्चकोटि के है जिन्हें जूड़े के रूप में सजाया गया है एवं मस्तक विशिष्ट पुष्प आदि से सुसज्जित किया गया है। अप्सरा ने अन्य आभूषणों में चक्रमुण्डल हार एवं द्विवली हार धारण किया हुआ है एवं द्विवली हार की लड़े उनके उन्नत उरोजों के मध्य से होकर कटि भाग को स्पर्श करती प्रदर्शित है। प्रतिहार कालीन शिल्पी की यह श्रेष्ठ कृति का लालित्य देखते ही बनता है। परन्तु दुर्भाग्यवश प्रतिमा की भुजायें व पाद खंडित है। खंडित अवस्था में भी यह प्रतिमा मूर्तिशिल्प कला की एक श्रेष्ठ कृति है। अप्सरा की इस प्रतिमा में नाभिदर्शना उनके मांसल अंगयष्टि अत्यन्त आकर्षक एवं भंगिमायुक्त है। मुख पर स्मित हास्य प्रदर्शित है। प्रतिमा में शालभंजिका भी उल्लासपूर्ण मुद्रा, स्वस्थ पयोधर, जंघा को अनावृत्त रखती हुई आकर्षक वस्त्र सज्जा एवं अलंकरण सम्पूर्ण दृष्टि स नारीजन्य शारीरिक मृदृता एवं आकर्षक सौन्दर्यता के भाव व्यक्त कर रहे हैं। शिल्पकारों ने प्रतिमा को इस तरह उकेरा है जिससे वह जीवन्त सी प्रतीत होती है तथा पर्यटकों के भीतर आकर्षण को जन्म देती है। ग्वालियर दुर्ग पर आने वाले पर्यटक शालभंजिका की प्रतिमा देखन के लिये उत्सुक रहते हैं। यह प्रतिमा किसी भी दृष्टि से देखने पर एक समान ही दिखाई पड़ती है। परन्तु यह प्रतिमा मूलत: दो हिस्से 'सिर और धड़' में बंटी हुई है। विश्व प्रसिद्ध ग्यारसपुर की यह शालभंजिका प्रतिमा जिले में ही नहीं वरन समस्त भारतवर्ष के लिये गौरवपूर्ण कलाकृति है।[21] शालभंजिका की इस प्रतिमा ने सन् 1987 में पेरिस में आयोजित 'श्रृंगार रस' प्रदर्शनी में भारत महोत्सव के अवसर पर भारत को गौरवान्वित किया है तथा यह प्रतिमा इण्डियन वीनस के नाम से भी विख्यात है।[22] प्रतिहार कालीन शिल्पी की इस श्रेष्ठ कृति का लालित्य देखते ही बनता है।[23] इसी श्रृंखला में

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly
Vol-4, Issue-1
15 Jan-2013

डॉ॰ अमिता खरे
सहायक प्राध्यापक, चित्रकला विभाग, वन्देमातरम् शिक्षा महाविद्यालय, ग्वालियर

www.shodh.net
Web Portal of Humanity & Social Science Research

सुहानिया जिला मुरैना से प्राप्त आभूषणों सें सुशोभित नारी प्रतिमाऐं तथा उसी त्रिभंग मुद्रा में अपने मुख मण्डल के श्रृंगार को दर्पण में निहारते हुये प्रतिमा व अनेक नारी प्रतिमाऐं प्राप्त है। इसी क्रम में पढ़ावली जिला मुरैना से प्राप्त विष्णु व लक्ष्मी की युगल प्रतिमा लक्ष्मीनारायण प्रतिमा है। अलंकरणों में नारायण द्वारा धारण की गई तीन लड़ी वाली मनकों की माला भुजबंध, अलंकृत मेखला, पाद्वलय, आदि है। तथा लक्ष्मी ने अलंकृत कर्ण, कुण्डल, मनकों की तीन लड़ी वाली माला, एकावली, स्तनसूत्र, भुजवंध, कंकण, मेखला आदि धारण किये हैं लक्ष्मी नारायण सभी पारम्परिक अलंकरणों से सुसज्जित है। श्रृंगार पक्ष विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इसी क्रम में सिहौनिया जिला मुरैना से प्राप्त यह राम सीता की युगल प्रतिमा ने अलंकरणों में राम जी रत्न कुण्डल, ग्रेवेयक, एकावली, यज्ञोपवीत, कंकण, भुजबंध, कटि में मेखला, नूपुर धारण किये है तथा सीता रत्नकुण्डल ग्रेवेयक, कंकण, एकावली मेखला, नूपुर आदि धारण किये हुये है राम सीता द्वारा धारण किये समस्त आभूषण अत्यन्त ही कलात्मक व सुन्दर हैं। राम सीता की आलिंगन मुद्रा खजुराहा की आलिगंन प्रतिमाओ के सदृश्य है। पाली (श्योपुर) से प्राप्त अर्ध-नारीश्वर ने अलंकरणों में कर्णकुण्डल, ग्रेवेयक हार, पटिकायुक्त यज्ञोपवीत, भुजवंधा, उरूद्दाम, पादवलय धारण किये हुये है। शिव ने अलंकृत पुष्पो के अलंकरण से युक्त पारदर्शी अधोवस्त्र तथा पार्वती न रेखाओ से युक्त अधोवस्त्र धारण किया है। भारतीय शैवधर्म में अर्ध-नारीश्वर प्रतिमायें ज्ञान व निच्छल प्रेम के स्वरूप में उत्कीर्ण की गयी है।[24] शक्ति सहित गणेश प्राचीनतम प्रतिमा गुप्तकाल से प्राप्त हुई है। सुरवाया जिला शिवपुरी तथा सुहानिया जिला मुरैना से प्राप्त गणेश रिद्धि की यह दोनो प्रतिमायें समस्त आभूषणों से सुसज्जित है। गणेश ने अंलकरणो में मस्तक पर मुक्तामणियों से युक्त करण्ड मुकुट: एकावली हार, संर्पयज्ञोपवीत, भुजवंध, कंकण, कटि मेखला, नुपूर आदि धारण किये है तथा देवी आभूषणों में चक्रकुण्डल, हार, अलंकृत मेखला, पादवलय आदि धारण किये हुये है जिनका अंकन शिल्पी ने अत्यन्त बारीकी से किया है। देवी की केश सज्जा अत्यन्त अनुपम है प्रतिमा में देवी रिद्धि, गणेश को मोहक दृष्टि से निहार रही है। आठवीं सदी की पढ़ावली जिला मुरैना से प्राप्त कुबेर और रिद्धि की यह प्रतिमा समस्त श्रृंगार से परिपूर्ण है। कुबेर के सिर पर कुंचित केशों का गोल जूड़ा, कर्णों में शंख व रत्न कुण्डल, ग्रीवा में मकर कंठी हार, वनमाला, भुजबंध, कंकण, उदर पर लटका हुआ हार, वक्षबंध, मेखला, पायजेब व पैर के अंगूठे में छल्ला धारण किये हुये है तथा देवी ने आभूषणों में द्विप्रकार के कुण्डल, स्तनसूत्र, हार, ग्रेवेयक, भुजबंध, कंकण, मेखला, नूपुर व उत्तरीय धारण किये हुये है। प्रस्तर खण्ड में उत्कीर्ण कुबेर देवी को मनमोहक दृष्टि से निहार रहे हैं। ये सभी विशिष्ट प्रतिमायें श्रृंगार व सौन्दर्य से परिपूर्ण हैं। शिव-पार्वती तथा कल्याण सुन्दर प्रतिमाये भी श्रृंगार भाव का अनूठा उदाहरण है।[25]

शांत रस

अभिनव गुप्त नें नौवॉ रस शान्त रस माना है। उनके मतानुसार सौन्दर्यानुभूति शान्त भाव के आने पर होती है तभी आत्मा में परमात्मा की अनुभूति होती है। शंकराचार्य ने भो ऐसा ही कहा है कि ब्रह्म रस एक दिव्य अनुभूति है।[26]

मध्य प्रदेश में जैन प्रतिमायें सर्वाधिक प्राप्त हुई हैं, इनमें महावीर, ऋषभनाथ एवं पार्श्वनाथ की प्रतिमायें सर्वाधिक संख्या में प्राप्त हुई हैं तथा सम्भवनाथ, अजितनाथ, सुपार्श्वनाथ, चन्द्रप्रभु, शान्तिनाथ, मनिसुव्रत एवं नेमिनाथ की भी पर्याप्त मात्रा में प्रतिमायें उपलब्ध हैं। जैन प्रतिमाओं में लांछनों, अष्ट प्रतिहारों एवं यक्ष-यक्षी युगलों का अंकन प्राप्त होता है।[27] जैन प्रतिमाओं की पहचान के मुख्यत: तीन आधार होते है। लाछंन, अभिलेख एवं यक्ष-यक्षी युगल।[28] ग्वालियर में संग्रहीत जैन मूर्तियों अमरोल, पढावली, सिहौनिया, ग्वालियर-दुर्ग, विदिशा, नरवर, व वटेश्वर आदि स्थानो से प्राप्त हुई है। इन सभी जैन मूर्तियों के मुख पर शान्त व सौम्य भाव को दर्शाया गया है। जैन प्रतिमाओं की यह विशेषता होती है कि तीर्थकरों के वक्ष स्थल पर श्रीवत्स का चिन्ह तथा अर्धा उन्मीलित नेत्र ध्यानस्थ भाव को दर्शाते हैं। पार्वती, सरस्वती, कमलासना-लक्ष्मी आसनस्थ ब्रह्मा-योगासन

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-4, Issue-1
15 Jan-2013

मध्य प्रदेश से प्राप्त प्राचीन मूर्तिशिल्प में श्रृंगार एवं शांत रस

डॉ॰ अमिता खरे

सहायक प्राध्यापक, चित्रकला विभाग, वन्देमातरम् शिक्षा महाविद्यालय, ग्वालियर

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

विष्णु, आसनस्थ शिव आदि प्रतिमाएँ हैं। जो सुनारी जिला विदिशा, सिहोनिया जिला मुरैना आदि स्थानों से प्राप्त हुई है।[29]

निष्कष – निष्कर्ष के रूप में यह कहा जा सकता है कि म.प्र. से प्राप्त प्रतिमाओं पर अनेक विद्वानों ने शोध कार्य किए हैं परन्तु इन प्रतिमाओं के रसानुभाव के अध्ययन का अभाव रहा है जो इन विद्वानों की पारखी दृष्टि से अछूता रहा गया है। म.प्र. से प्राप्त श्रृंगार और शांत रस से परिपूर्ण मूर्ति शिल्प में भाव भंगिमाऐं, आभूषण सज्जा, मुद्राऐं व सौन्दर्य बोध का वर्णन ही मेरे शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य रहा है। मध्य प्रदेश में पर्याप्त संख्या में प्राप्त श्रृंगार एवं शांत रस की प्रतिमाओं की उपस्थिति इस बात की ओर भी संकत करती है कि मध्य प्रदेश का प्राचीन समाज सदा से ही शांति, उल्लास एवं हर्ष का कामी रहा है।

भारत में रस को सौन्दर्य से भिन्न माना गया है यद्यपि सामान्यत: रस को परम सौन्दर्य की अनुभूति माना गया है। भारतवर्ष में रस को कला का प्राण माना जाता है। भरतमुनि द्वारा प्रतिपादित रस ग्रंथों में नाट्य शास्त्र प्राचीनतम ग्रंथ हैं। भरतमुनि ने रसों की संख्या आठ मानी है तथा भरतमुनि ने रसों को दो कोटियों में रखा है वह रति एवं शोक है। रस के सम्बन्ध में अभिनव गुप्त ने अपने ग्रंथ अभिनव भारती में रस को आनन्द कहा है। अभिनव गुप्त ने नौ भाव कहे हैं। चित्रसूत्र ग्रंथ में नवाँ रस शान्त रस माना गया है। कुछ विद्वान इसे भक्ति रस भी मानते हैं। रस सिद्धांत नाट्य, काव्य, नृत्य, संगीत व अन्य कलाओं की भांति मूर्ति कला में भी मान्य हुआ है। मैंने अपने शोध पत्र में श्रृंगार रस व शान्त रस से सम्बन्धित मूर्ति शिल्प का वर्णन किया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अशोक, 'कला, सौन्दर्य और समीक्षा शास्त्र', संजय पब्लिकेशन्स, अस्पताल मार्ग, आगरा-3, पृष्ठ 181
2. वाजपेयी, डॉ0 राजेन्द्र, 'सौन्दर्य, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, रवीन्द्रनाथ ठाकुर मार्ग, बानगंगा,भोपाल(म.प.), तृतीय संस्करण 2004, पृष्ठ 149
3. राय, निहार रंजन, 'भारतीय कला के आयाम', द मेकमिलन कम्पनी ऑफ इण्डिया लिमिटेड, नई दिल्ली-मुम्बई-कलकत्ता-मद्रास, संस्करण प्रथम, पृष्ठ 100
4. कला अंक, सम्मेलन पत्रिका, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद
5. अशोक, 'कला, सौन्दर्य और समीक्षा शास्त्र', संजय पब्लिकेशन्स, अस्पताल मार्ग, आगरा-3, पृष्ठ 209
6. अशोक, 'कला, सौन्दर्य और समीक्षा शास्त्र', संजय पब्लिकेशन्स, अस्पताल मार्ग, आगरा-3, पृष्ठ 210
7. वाजपेयी, डॉ0 राजेन्द्र, 'सौन्दर्य, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, रवीन्द्रनाथ ठाकुर मार्ग, बानगंगा,भोपाल(म.प्र.), तृतीय संस्करण 2004, पृष्ठ 167
8. शर्मा, डॉ0 हरद्वारीलाल, कला दर्शन, साहित्य संगम, नया 100 लूकरगंज, इलाहाबाद (उ.प्र.) संस्करण 2009, पृष्ठ 69
9. अशोक, 'कला, सौन्दर्य और समीक्षा शास्त्र', संजय पब्लिकेशन्स, अस्पताल मार्ग, आगरा-3, पृष्ठ 185
10. चित्रसूत्र ग्रंथ - पृष्ठ 431
11. वाजपेयी, डॉ0 राजेन्द्र, 'सौन्दर्य, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, रवीन्द्रनाथ ठाकुर मार्ग, बानगंगा,भोपाल(म.प्र.), तृतीय संस्करण 2004, पृष्ठ 172
12. अशोक, 'कला, सौन्दर्य और समीक्षा शास्त्र', संजय पब्लिकेशन्स, अस्पताल मार्ग, आगरा-3, पृष्ठ 186
13. अशोक, 'कला, सौन्दर्य और समीक्षा शास्त्र', संजय पब्लिकेशन्स, अस्पताल मार्ग, आगरा-3, पृष्ठ 195
14. अग्रवाल वासुदेव शरण, 'भारतीय कला', पृथ्वी प्रकाशन बनारस, 1996, पृष्ठ 79
15. सक्सेना, डॉ0 चेतनस्वरूप, शोध प्रबंध, रीवा संभाग में कल्चुरीकालीन मंदिर स्थापत्य एवं मूर्तिकला का अध्ययन, पृष्ठ 393
16. शर्मा, डॉ0 हरद्वारीलाल, कला दर्शन, साहित्य संगम, नया 100 लूकरगंज, इलाहाबाद (उ.प्र.) संस्करण 2009, पृष्ठ 172
17. वाजपेयी, डॉ0 राजेन्द्र, 'सौन्दर्य, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, रवीन्द्रनाथ ठाकुर मार्ग, बानगंगा,भोपाल(म.प्र.), तृतीय संस्करण 2004, पृष्ठ 4
18. वर्मा, डॉ0 महेन्द्र, 'प्राचीन भारत की वास्तुकला', मानसिंह आर्य बुक डिपो 30, नाईवाला करोल बाग, नई दिल्ली-110005, प्रथम संस्करण- 1996, पृष्ठ 172
19. वाजपेयी, डॉ0 राजेन्द्र, 'सौन्दर्य, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, रवीन्द्रनाथ ठाकुर मार्ग, बानगंगा,भोपाल(म.प्र.), तृतीय संस्करण 2004, पृष्ठ 5-6
20. सक्सेना, डॉ0 चेतन्य स्वरूप, 'गूजरी महल संग्रहालय' मार्गदर्शिका पृष्ठ 30

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-4, Issue-1
15 Jan-2013

मध्य प्रदेश से प्राप्त प्राचीन मूर्तिशिल्प में श्रृंगार एवं शांत रस

डॉ॰ अमिता खरे

सहायक प्राध्यापक, चित्रकला विभाग, वन्देमातरम् शिक्षा महाविद्यालय, ग्वालियर

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

21. स्वयं के सर्वेक्षण के आधार पर
22. सिंह लाल बहादुर, 'दिशा-विदिशा', ग्वालियर (म.प्र.), पृष्ठ 34
23. गुप्ता, डॉ0 कृष्णा, 'ग्वालियर संभाग की ब्राह्मण मूर्तिकला का बृहद विवेचन' (शोध प्रबंध), पृष्ठ 80
24. स्वयं के सर्वेक्षण के आधार पर
25. अशोक, 'कला, सौन्दर्य और समीक्षा शास्त्र', संजय पब्लिकेशन्स, अस्पताल मार्ग, आगरा-3, पृष्ठ 187
26. पाठक, कुमार नरेश, 'म.प्र. का जन शिल्प', कुन्दमुन्द ज्ञानपीठ 584, महात्मा गाँधी मार्ग, इन्दौर 452001 भारत, संस्करण प्रथम 2001, पृष्ठ 13-14
27. तिवारी, डॉ0 मारूति, 'जैन प्रतिमा विज्ञान', नन्दन प्रसाद पार्श्वनाथ विद्याश्रम शोध-संस्थान आई.टी. आई. रोड, वाराणसी-221005, संस्करण 1981, पृष्ठ 95
28. पाठक, कुमार नरेश, 'म.प्र. का जैन शिल्प', कुन्दमुन्द ज्ञानपीठ 584, महात्मा गाँधी मार्ग, इन्दौर 452001 भारत, संस्करण प्रथम 2001, पृष्ठ 143-144
29. स्वयं के सर्वेक्षण के आधार पर

श्रृंगार रस की प्रतिमाऐं

शालभंजिका	**दपर्ण देखती अप्सरा**	**उमा महेश्वर**	**अर्ध-नारीश्वर**

SHODH SANCHAYAN

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-4, Issue-1
15 Jan-2013

मध्य प्रदेश से प्राप्त प्राचीन मूर्तिशिल्प में श्रृंगार एवं शांत रस

डॉ॰ अमिता खरे

सहायक प्राध्यापक, चित्रकला विभाग, वन्देमातरम् शिक्षा महाविद्यालय, ग्वालियर

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

शांत रस की प्रतिमाऐं			
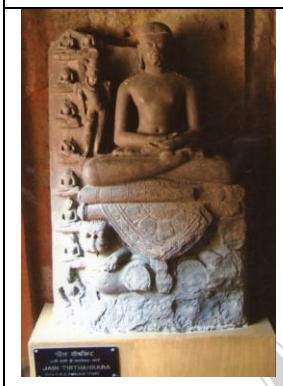			
ऋषभनाथ	योगासन विष्णु	कमलासना लक्ष्मी	आसनस्थ ब्रह्मा

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN